http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 5, 15-19

Article ID: 661

दलहनी फसलों से किसान अपनी आमदनी कैसे बढ़ाएँ

रूपेंद्र कुमार[1]
मम्ता कम्बोज [2], अनुपम[3]

[1]कृषि विज्ञान केन्द्र, रोहतक
[2]कपास अनुभाग
आनुवंशिकी और पादप प्रजनन
[3]पीएच.डी. शोधकर्ता
सस्य विज्ञान विभाग
चौधरी चरण सिंह हरियाणा
कृषि विश्वविद्यालय , हिसार

*अनुरूपी लेखक

रूपेंद्र कुमार*

परिचय

भारत कृषि प्रधान देश है, जहाँ खेती करोड़ों परिवारों की आजीविका का प्रमुख आधार है। आज किसानों के सामने खेती की लागत बढ़ने, मौसम में बदलाव, मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने और फसलों का उचित बाजार मूल्य प्राप्त करने जैसी अनेक चुनौतियाँ हैं। ऐसी परिस्थितियों में दलहनी फसलें किसानों के लिए आमदनी बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण विकल्प बन सकती हैं। अरहर, चना, मसूर, मूंग, उड़द और मटर जैसी दलहनी फसलें न केवल प्रोटीन का प्रमुख स्रोत हैं, बल्कि मिट्टी की उर्वरता सुधारने और फसल चक्र को संतुलित बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

दलहनी फसलों की एक विशेषता यह है कि इनमें से अधिकांश फसलें अपनी जड़ों में मौजूद राइजोबियम जीवाणुओं की सहायता से वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर सकती हैं। इससे खेती की पोषण व्यवस्था को लाभ मिलता है। उचित किस्म, समय पर बुवाई, संतुलित पोषण और वैज्ञानिक प्रबंधन अपनाकर किसान दलहनी फसलों से बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, बाजार की जानकारी, उचित भंडारण और सामूहिक विपणन के माध्यम से भी आमदनी बढ़ाने के अवसर मिल सकते हैं।

1. दलहनी फसलों का महत्व

दलहनी फसलें भारतीय भोजन में प्रोटीन का महत्वपूर्ण स्रोत हैं। दालों का उपयोग लगभग पूरे देश में किया जाता है और इनकी मांग घरेलू बाजार में बनी रहती है। पशुओं के लिए भी कुछ दलहनी फसलों के अवशेष उपयोगी हो सकते हैं।

प्रमुख दलहनी फसलें निम्नलिखित हैं:

- **चना:** रबी मौसम की महत्वपूर्ण फसल, जो अनेक क्षेत्रों में कम सिंचाई के साथ उगाई जाती है।
- **मसूर:** कम अवधि वाली रबी दलहनी फसल, जो उपयुक्त क्षेत्रों में लाभकारी हो सकती है।
- **मूंग:** कम अवधि वाली फसल, जिसे खरीफ या गर्मी के मौसम में क्षेत्र के अनुसार उगाया जा सकता है।
- **उड़द:** खरीफ और कुछ क्षेत्रों में अन्य उपयुक्त मौसमों की महत्वपूर्ण दलहनी फसल।
- **अरहर:** खरीफ मौसम की लंबी अवधि वाली फसल, जो उपयुक्त वर्षा और जलवायु में अच्छी पैदावार दे सकती है।
- **मटर:** खाद्य और बाजार की मांग के अनुसार उगाई जाने वाली दलहनी फसल।

किसान को अपनी मिट्टी, जलवायु, सिंचाई की उपलब्धता, फसल अवधि और बाजार की मांग के अनुसार दलहनी फसल का चयन करना चाहिए।

2. दलहनी फसलों से खेती की लागत कम करने में मदद

खेती की लागत में उर्वरक, बीज, सिंचाई, मजदूरी, कीटनाशक और मशीनरी का खर्च शामिल होता है। दलहनी फसलों को फसल चक्र में शामिल करने से पोषक तत्वों के प्रबंधन और खेती की लागत को संतुलित करने में मदद मिल सकती है।

दलहनी फसलों की जड़ों में राइजोबियम जीवाणुओं की सहायता से नाइट्रोजन स्थिरीकरण होता है। इससे मिट्टी और फसल प्रणाली को नाइट्रोजन का लाभ मिल सकता है। हालांकि, इसका प्रभाव फसल, किस्म, मिट्टी, नमी और जीवाणुओं की सक्रियता पर निर्भर करता है।

दलहनी फसलें उगाने से अगली फसल को कुछ परिस्थितियों में लाभ मिल सकता है, विशेषकर जब जड़ें और फसल अवशेष खेत में बने रहें। फिर भी, इससे अगली फसल के लिए सभी नाइट्रोजन आवश्यकताएँ पूरी हो जाएँगी, ऐसा मानना उचित नहीं है।

किसानों को मिट्टी परीक्षण के आधार पर उर्वरकों का उपयोग करना चाहिए और फसल की जरूरत के अनुसार अन्य पोषक तत्वों की पूर्ति भी करनी चाहिए।

3. मिट्टी की उर्वरता सुधारने में दलहनी फसलों की भूमिका

मिट्टी की सेहत खेती की दीर्घकालीन उत्पादकता का आधार है। दलहनी फसलें फसल चक्र में शामिल होने पर मिट्टी की उर्वरता और पोषक तत्वों के प्रबंधन में योगदान दे सकती हैं।

इनकी जड़ों में रहने वाले राइजोबियम जीवाणु वायुमंडलीय नाइट्रोजन को पौधों के उपयोग योग्य रूप में बदलने में मदद करते हैं। फसल के अवशेष खेत में छोड़ने और उचित प्रबंधन करने से जैविक पदार्थों की पूर्ति में भी योगदान मिल सकता है।

दलहनी फसलों को अनाज वाली फसलों के साथ उचित क्रम में उगाने से एक ही प्रकार के पोषक तत्वों पर लगातार दबाव कम करने और फसल चक्र में विविधता लाने में मदद मिल सकती है।

इस प्रकार दलहनी फसलें केवल दाल उत्पादन का साधन नहीं हैं, बल्कि मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने वाली टिकाऊ कृषि प्रणाली का भी महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

4. उन्नत किस्म और प्रमाणित बीज से बढ़ाएँ उत्पादन

दलहनी फसलों से अच्छी आमदनी प्राप्त करने के लिए उपयुक्त किस्म और अच्छी गुणवत्ता वाले बीज का चयन जरूरी है। क्षेत्र के लिए अनुशंसित किस्मों में उत्पादन क्षमता, पकने की अवधि तथा प्रमुख रोगों के प्रति सहनशीलता जैसे गुणों को ध्यान में रखना चाहिए।

किसान को प्रमाणित बीज खरीदना चाहिए और बुवाई से पहले बीज की गुणवत्ता की जाँच करनी चाहिए। जहाँ अनुशंसित हो, वहाँ राइजोबियम कल्चर और अन्य उपयुक्त जैव उर्वरकों से बीज उपचार किया जा सकता है। इससे नाइट्रोजन स्थिरीकरण की प्रक्रिया को लाभ मिल सकता है।

बीज उपचार करते समय उत्पाद के लेबल और कृषि विशेषज्ञ की सलाह का पालन करना चाहिए। रासायनिक बीज उपचार और जैव उर्वरकों को मिलाने का क्रम भी संबंधित निर्देशों के अनुसार होना चाहिए।

सही किस्म और बीज प्रबंधन से फसल की स्थापना बेहतर हो सकती है, जिससे उत्पादन की संभावना बढ़ती है और असफलता का जोखिम कम करने में सहायता मिलती है।

5. समय पर बुवाई और वैज्ञानिक खेती अपनाएँ

दलहनी फसलों में बुवाई का उचित समय फसल की अवधि, मौसम, मिट्टी में नमी और स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार तय होता है। समय से बुवाई करने पर पौधों को अनुकूल परिस्थितियाँ मिलती हैं

और कई बार कीट एवं रोगों के जोखिम को कम करने में भी सहायता मिल सकती है।

किसानों को खेत की उचित तैयारी, सही बीज दर और पौधों के बीच अनुशंसित दूरी का ध्यान रखना चाहिए। बहुत घनी बुवाई से पौधों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ सकती है, जबकि बहुत कम पौध संख्या उत्पादन को प्रभावित कर सकती है।

बुवाई के समय खेत में पर्याप्त नमी होना आवश्यक है। साथ ही, जलभराव से बचाव और उचित जल निकास पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि अनेक दलहनी फसलें लंबे समय तक पानी जमा रहने की स्थिति में प्रभावित होती हैं।

किसान अपने क्षेत्र के कृषि विज्ञान केंद्र या कृषि विश्वविद्यालय से फसल विशेष की बुवाई तकनीक और अनुशंसित बीज दर की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

6. सिंचाई और पोषण प्रबंधन से बेहतर लाभ

दलहनी फसलों की सिंचाई की आवश्यकता फसल और क्षेत्र के अनुसार बदलती है। कुछ दलहनी फसलें कम पानी में भी उगाई जा सकती हैं, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्हें पानी की आवश्यकता नहीं होती।

जहाँ सिंचाई उपलब्ध हो, वहाँ फसल की महत्वपूर्ण अवस्थाओं पर नमी की कमी से बचना चाहिए। चना, मसूर, मूंग और अन्य दलहनी फसलों में फूल आने तथा फलियाँ बनने की अवस्था में पानी की कमी से उत्पादन प्रभावित हो सकता है। सिंचाई का सही समय मिट्टी, मौसम और फसल की स्थिति के अनुसार तय करना चाहिए।

दलहनी फसलों को भी फॉस्फोरस, पोटाश, सल्फर और अन्य पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। केवल नाइट्रोजन स्थिरीकरण पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है। मिट्टी परीक्षण के आधार पर संतुलित उर्वरक उपयोग से फसल की वृद्धि और उत्पादन को लाभ मिल सकता है।

7. कीट और रोगों का समय पर प्रबंधन

दलहनी फसलों में कीट और रोगों के कारण उत्पादन तथा बीज की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है। चने में फली छेदक कीट, अरहर में फली छेदक और कुछ रोग, जबकि मूंग एवं उड़द में पीला मोजेक रोग जैसी समस्याएँ क्षेत्र के अनुसार देखने को मिल सकती हैं।

किसानों को नियमित रूप से खेत का निरीक्षण करना चाहिए, ताकि कीट या रोग का प्रकोप शुरुआती अवस्था में पहचाना जा सके। रोगग्रस्त पौधों, खरपतवारों और फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन भी महत्वपूर्ण है।

एकीकृत कीट प्रबंधन अपनाकर अनावश्यक खर्च कम करने में मदद मिल सकती है। इसमें समय पर बुवाई, उपयुक्त किस्म, फसल चक्र, खेत की निगरानी, फेरोमोन ट्रैप या अन्य उपयुक्त उपाय तथा जरूरत पड़ने पर अनुशंसित कीटनाशकों का प्रयोग शामिल हो सकता है।

किसानों को केवल अनुमान के आधार पर दवाओं का छिड़काव नहीं करना चाहिए। कीट की पहचान, आर्थिक क्षति स्तर और स्थानीय कृषि सलाह के अनुसार ही उचित उपाय अपनाने चाहिए।

8. फसल चक्र और मिश्रित खेती से बढ़ाएँ आमदनी

दलहनी फसलों को फसल चक्र में शामिल करने से खेती में विविधता आती है और मौसम या बाजार से जुड़े जोखिमों को संतुलित करने में मदद मिल सकती है।

उदाहरण के लिए, कुछ क्षेत्रों में गेहूँ के साथ चना या अन्य उपयुक्त रबी फसलें, जबकि गर्मी के मौसम में कम अवधि वाली मूंग जैसी फसलें फसल चक्र के विकल्प बन सकती हैं। उपयुक्त परिस्थितियों में अरहर के साथ अन्य फसलों की अंतरवर्तीय खेती भी की जा सकती है।

हालाँकि, मिश्रित या अंतरवर्तीय खेती का चयन फसलों की अवधि, पानी, पोषक तत्वों की आवश्यकता, पौधों की दूरी और उपलब्ध मशीनरी को ध्यान में रखकर करना चाहिए।

किसान अपने खेत के छोटे हिस्से में नई फसल प्रणाली का प्रयोग करके उत्पादन और लागत का रिकॉर्ड रख सकते हैं। इससे यह समझने में मदद मिलेगी कि कौन-सा फसल चक्र उनकी परिस्थितियों में अधिक लाभकारी है।

9. उचित भंडारण और बाजार प्रबंधन

दलहनी फसलों से लाभ बढ़ाने के लिए केवल अधिक उत्पादन करना पर्याप्त नहीं है। कटाई के बाद दानों की सफाई, उचित सुखाई और सुरक्षित भंडारण भी जरूरी है।

फसल की कटाई सही परिपक्वता अवस्था में करनी चाहिए। दानों में नमी अधिक रहने पर भंडारण के दौरान फफूँद, कीट और गुणवत्ता में गिरावट की आशंका बढ़ जाती है। इसलिए दालों को सुरक्षित नमी स्तर तक सुखाकर साफ स्थान पर भंडारित करना चाहिए।

बाजार में बिक्री से पहले स्थानीय मंडी के भाव, खरीद केंद्रों की उपलब्धता, परिवहन खर्च और गुणवत्ता संबंधी आवश्यकताओं की जानकारी लेना उपयोगी है।

कुछ दलहनी फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) घोषित किया जाता है, लेकिन सरकारी खरीद का लाभ प्राप्त करने के लिए संबंधित फसल, राज्य, खरीद अवधि, पंजीकरण और गुणवत्ता की शर्तें लागू हो सकती हैं। किसानों को वर्तमान खरीद व्यवस्था की जानकारी संबंधित एजेंसी या मंडी से प्राप्त करनी चाहिए।

10. प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन से अतिरिक्त आय

दलहनी फसलों से आमदनी बढ़ाने का एक अन्य उपाय मूल्य संवर्धन है। किसान अपनी परिस्थितियों और बाजार की मांग के अनुसार कच्चे दानों की बिक्री के साथ दाल प्रसंस्करण की संभावनाएँ भी तलाश सकते हैं।

चना, अरहर, मूंग और मसूर जैसी फसलों से दाल तैयार की जा सकती है। कुछ फसलों से बेसन, अंकुरित अनाज तथा अन्य खाद्य उत्पाद बनाने की संभावनाएँ भी होती हैं।

हालाँकि, प्रसंस्करण इकाई लगाने से पहले मशीनरी, बिजली, श्रम, पैकिंग, गुणवत्ता परीक्षण, लाइसेंस और बाजार की मांग का आकलन करना आवश्यक है। छोटे किसानों के लिए किसान उत्पादक संगठन, सहकारी समिति या स्थानीय प्रसंस्करण इकाई के साथ मिलकर काम करना एक व्यावहारिक विकल्प हो सकता है।

सामूहिक विपणन और प्रसंस्करण से किसानों को अपनी उपज के लिए बेहतर बाजार तलाशने और कुछ खर्च साझा करने का अवसर मिल सकता है।

11. सरकारी योजनाओं और कृषि सलाह का लाभ उठाएँ

दलहनी फसलों की खेती को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में बीज, प्रशिक्षण, उत्पादन तकनीक और कृषि संसाधनों से संबंधित कार्यक्रम उपलब्ध हो सकते हैं। किसान अपने जिले के कृषि विभाग, कृषि विज्ञान केंद्र और कृषि विश्वविद्यालय से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

सरकारी योजनाओं के अंतर्गत मिलने वाली सहायता, पात्रता और आवेदन प्रक्रिया समय तथा राज्य के अनुसार अलग-अलग हो सकती है। इसलिए किसानों को किसी भी योजना के लिए आवेदन करने से पहले संबंधित विभाग से वर्तमान दिशा-निर्देशों की पुष्टि करनी चाहिए।

किसानों के समूह, किसान उत्पादक संगठन और स्थानीय कृषि संस्थाएँ भी बेहतर बीज, वैज्ञानिक प्रशिक्षण तथा विपणन संबंधी जानकारी प्राप्त करने में सहायता कर सकती हैं।

12. आमदनी बढ़ाने के लिए किसानों की कार्ययोजना

दलहनी फसलों से अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए किसान निम्नलिखित कदम अपना सकते हैं:

1. अपने क्षेत्र के लिए उपयुक्त दलहनी फसल और उन्नत किस्म का चुनाव करें।
2. प्रमाणित बीज और अनुशंसित बीज उपचार अपनाएँ।
3. समय पर बुवाई और उचित पौध दूरी का ध्यान रखें।
4. मिट्टी परीक्षण के आधार पर संतुलित पोषण प्रबंधन करें।
5. सिंचाई, कीट और रोगों का समय पर प्रबंधन करें।
6. दलहनी फसलों को फसल चक्र में शामिल करके मिट्टी की सेहत बनाए रखें।
7. कटाई के बाद दानों की सफाई, सुखाई और सुरक्षित भंडारण करें।
8. मंडी भाव, सरकारी खरीद और बाजार की मांग की जानकारी रखें।
9. जहाँ व्यावहारिक हो, वहाँ प्रसंस्करण और सामूहिक विपणन के विकल्प अपनाएँ।
10. प्रत्येक फसल की लागत, उत्पादन और बिक्री का लिखित हिसाब रखें।